

भारतीय प्रिंटमेकिंग के अग्रदूत: राजा रवि वर्मा

डॉ. महेश सिंह

सह आचार्य, चित्रकला विभाग, दृश्य कला संकाय, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी - 221005

शोध सार

19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरुआत में लिथोग्राफ, क्रोमोलिथोग्राफ और ओलियोग्राफ क्रांतिकारी तकनीकी विद्या के रूप में उभरे, जिन्होंने भारत में सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक विकास को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारत यूरोपीय देशों खासकर इटली और जर्मनी में छपे इन प्रिंट, पिक्चर पोस्टकार्ड और लेबल के एक बड़े बाजार के रूप में उभरा। इस तकनीक ने कालान्तर की हाथ से प्रतिलिपी बनाने की महंगी और थकाऊ प्रक्रिया की जगह ले ली। भारत में लिथो प्रिंट के आने से पहले, लकड़ी की कटाई, नक्काशी और हाथ से रंगाई की तकनीकें भी प्रचलन में थीं।

विभिन्न देवताओं और संतों की दृश्य छवियां, पूजा के लिए एक साधारण घर में आसानी से उपलब्ध नहीं थीं। चूंकि भारतीय लघु चित्र शाही परिवारों के लिए थे, इसलिए ऐतिहासिक घर और मंदिर केवल कुछ ही कुलीन लोगों के लिए सुलभ थे। क्रोमोलिथोग्राफ और ओलियोग्राफ ने किंवदंतियों, देवताओं, लोकप्रिय मिथकों, ऐतिहासिक दृश्यों और धार्मिक ग्रंथों के उद्धरणों के तेल चित्रों की नकल की, जिससे बड़े पैमाने पर पौराणिक ग्रंथों का प्रसार संभव हो पाया। इन पौराणिक ओलियोग्राफ ने धर्मों को उनके अनुयायियों के एक बहुत बड़े जाति या वर्ग समूह के लिए खोल दिया। इस अवलोकनीय घटना या परिस्थिति ने पूजा की प्रकृति और तरीके को बदल दिया और दृश्य छवि का लोकतंत्र आया।

बीज शब्द: ओलियोग्राफ, लिथोग्राफ, पिक्चर पोस्टकार्ड, पौराणिक, क्रोमोलिथोग्राफ

भारत में लिथोग्राफी का उदय

भारत में उत्पादित क्रोमोलिथोग्राफ व ओलियोग्राफ पर अक्सर “जर्मनी से मुद्रित” लेबल लगाया जाता था। 19वीं सदी के उत्तरार्ध में, भारतीय उपमहाद्वीप में कला-निर्माण के यूरोपीय तरीके को बहुत लोकप्रियता मिलनी शुरू हुई, जिसमें राजा रवि वर्मा (1848-1906), बामपद बनर्जी (1851-1932), आनंदप्रसाद बागची, पास्तनजी बोमनजी (1851-1938), मंचेर शॉ पिथावाला, महादेव विश्वनाथ धुरंधर (1867-1944), सावलाराम लक्ष्मण हलदनकर, जामिनी प्रकाश गांगूली और हेमेंद्रनाथ मजूमदार जैसे कलाकार आए। उन्होंने भारतीय परंपरा, संस्कृति और रीति-रिवाजों का पता लगाने और उनका प्रतिनिधित्व करने के लिए पश्चिमी कला और तकनीकों की नई शैली तैयार की। और इस प्रकार भारत में राजा रवि वर्मा और उनके समकालीन कलाकारों के काम ने निर्विवाद रूप में क्रोमोलिथोग्राफी परंपरा से लोकप्रिय कला की नींव रखी। 1790 के दशक में लिथोग्राफी का आविष्कार हुआ।

लिथोग्राफी के आविष्कार का श्रेय जर्मनी के एलोइस सेनेफेल्डर (1771-1834) को जाता है, जिन्होंने मुद्रण तकनीक में एक विशेष पत्थर की शीला (लिथो) का इस्तेमाल किया था। यह लिथोग्राफी की मुद्रण तकनीक तेल और पानी के रासायनिक प्रतिकर्षण पर आधारित है। विशेष रूप से तैयार चूना पत्थर की चिकनी सतह पर क्रेयॉन (ऑयलबेस) से चित्र बनाए जाते हैं। फिर पत्थर को पानी से गीला किया जाता है, जिसे पत्थर क्रेयॉन से ढके नहीं गए क्षेत्रों में भी ग्रहण करता है। चमड़े के रोलर से लगाई गई तैलीय स्याही या पेंट केवल चित्र पर चिपकते हैं और चूना पत्थर के गीले हिस्से से स्याही दूर हट जाती है। फिर स्याही लगी हुई ड्राइंग पर कागज को दबाकर प्रिंट बनाया जाता है। पूरे लिथो प्लेट को रंगने और छवि को जल रंग जैसा रंग देने के लिए एक या दो रंगों का इस्तेमाल शुरुआती रंगीन लिथोग्राफ में

प्रचलित था, इसलिए प्रिंट को टिंटेड लिथोग्राफ कहा जाता था। इस प्रभाव का इस्तेमाल मुख्य रूप से लैंडस्केप और स्थलाकृतिक चित्रण के लिए किया जाता था। अधिक विस्तृत रंग भरने के लिए, कलाकारों ने लिथोग्राफ के प्रिंट पर हाथ से रंगने की तकनीक का भी इस्तेमाल किया।

1830 में, क्रोमोलिथोग्राफी उभरी और अत्यधिक रंगीन प्रिंट बने लेकिन 1860 के दशक में ही इसका व्यापक रूप से व्यावसायिक उपयोग शुरू हुआ और 19वीं सदी के अंत तक यह रंग प्रतिकृति की सबसे लोकप्रिय विधि थी। क्रोमोलिथोग्राफी मूल रूप से लिथोग्राफी का एक प्रकार है, जिसमें प्रत्येक रंग के लिए एक-एक पत्थर का उपयोग किया जाता है। प्रिंटर रंगों की सही स्थिति प्राप्त करके और ओवरलेइंग रंगों को ठीक से विलय करके छवि को 'रजिस्ट्रेशन' में रखते हैं। क्रोमोलिथोग्राफी की तरह, ओलियोग्राफी भी लिथोग्राफी के समान है जिसमें तेल चित्रकला की नकल में तेल पेंट के साथ मुद्रण किया जाता है। 19वीं सदी की शुरुआत में, वियना में ओलियोग्राफ प्रिंट करने वाली मशीन का आविष्कार किया गया था।

राजा रवि वर्मा का परिचय

राजा रवि वर्मा एक भारतीय चित्रकार और कलाकार थे। उनका जन्म 29 अप्रैल 1848 को एक कुलीन परिवार में एम.आर. राय. रवि वर्मा, कोइल थंपुरन किलिमनूर (मलयालम) के रूप में किलिमनूर महल में हुआ था, जो कि तत्कालीन रियासत त्रावणकोर (वर्तमान केरल) में स्थित थी। रवि वर्मा एञ्जुमाविल नीलकंठन भट्टतिरिपाद और उमा अंबाबाई थंपुरत्ती के पुत्र थे। रवि वर्मा को "राजा" की उपाधि भारत के वायसराय और गवर्नर-जनरल लॉर्ड कर्जन द्वारा एक व्यक्तिगत उपाधि के रूप में प्रदान की गई थी।

उनकी मां उमा अंबाबाई थंपुरत्ती बैरोनियल परिवार से थीं, जो त्रावणकोर राज्य के भीतर किलिमनूर सामंती संपत्ति पर शासन करता था। वह एक प्रतिभाशाली कवित्री और लेखिका थीं, व पिता संस्कृत और आयुर्वेद के विद्वान थे और केरल के एर्नाकुलम जिले से थे। रवि वर्मा के दो भाई-बहन थे।

उनकी कृतियाँ यूरोपीय अकादमिक कला और विशुद्ध भारतीय संवेदनशीलता और प्रतीकात्मकता के मिश्रण का एक उत्तम उदाहरण हैं। विशेष रूप से, वे अपने चित्रों के किफायती लिथोग्राफ व ओलियोग्राफ को जन सामान्य के लिए उपलब्ध कराने के लिए प्रसिद्ध थे, जिसने एक चित्रकार और सार्वजनिक व्यक्ति के रूप में उनकी पहुँच और प्रभाव को बहुत बढ़ाया। उनके लिथोग्राफ व ओलियोग्राफ ने आम लोगों की ललित कलाओं से भागीदारी को बढ़ाया और जन सामान्य लोगों के बीच कलात्मक स्वाद को परिभाषित किया।

इसके अलावा, हिंदू देवी-देवताओं के उनके धार्मिक चित्रण और भारतीय महाकाव्य रामायण, महाभारत, पुराणों और कविता से उनके लिथोग्राफ व ओलियोग्राफ प्रिंट को बहुत प्रशंसा मिली है।

राजा रवि वर्मा निजी जीवन

1866 में, 18 वर्ष की आयु में, वर्मा का विवाह त्रावणकोर राज्य के एक अन्य प्रमुख जागीरदार, मावेलिकारा के राजघराने की 12 वर्षीय भगीरथी बाई से हुआ। उल्लेखनीय रूप से] मावेलिकारा का घराना त्रावणकोर के राजघराने की एक शाखा थी। भगीरथी तीन बहनों में सबसे छोटी थीं, और उनकी दोनों बड़ी बहनों को वंश को आगे बढ़ाने के लिए 1857 में त्रावणकोर के शाही परिवार में गोद ले लिया गया था। उन्हें अत्तिंगल की वरिष्ठ और कनिष्ठ रानी के रूप में जाना जाता था और उनकी संतान को त्रावणकोर के सिंहासन का उत्तराधिकार दिया गया था। इसलिए भगीरथी के साथ विवाह के कारण रवि वर्मा का शाही परिवार से बहुत करीबी संबंध बन गया।



राजा रवि वर्मा प्रेरस, कृष्णा शिष्टाई, 1906, ओलियोग्राफ, 35 गुणा 50 सेमी



राजा रवि वर्मा प्रेरस, मोहिनी, 1894, ओलियोग्राफ 35 गुणा 50 सेमी

उनके बच्चे (क्योंकि वे अपनी माँ के परिवार से थे) जन्म से ही शाही होंगे। यह विवाह, जिसे माता-पिता ने उचित भारतीय तरीके से तय किया था, सामंजस्यपूर्ण और सफल रहा। इस जोड़े के पाँच बच्चे थे, दो बेटे और तीन बेटियाँ। उनके बड़े बेटे केरल वर्मा (जन्म 1876) अत्यधिक आध्यात्मिक स्वभाव के थे। उन्होंने कभी शादी नहीं की और अंततः 1912 में घर छोड़कर दुनिया को त्याग दिया। छोटे बेटे राम वर्मा (जन्म 1879) को अपने पिता की कलात्मक प्रतिभा विरासत में मिली और उन्होंने मुंबई के जेजे स्कूल ऑफ आर्ट्स में पढ़ाई की। राजा रवि वर्मा ने अपने 57वें जन्मदिन के आसपास संन्यास लेने और 60 वर्ष की आयु में सभी सांसारिक जीवन से संन्यास लेने के अपने निर्णय की घोषणा की। अपने अंतिम वर्षों में वे राजा राजा वर्मा की मृत्यु के शोक से पीड़ित थे, और मधुमेह से भी पीड़ित थे, जिसके कारण 2 अक्टूबर 1906 को उनकी मृत्यु हो गई।

राजा रवि वर्मा की कला यात्रा

राजा रवि वर्मा को त्रावणकोर के अगले महाराजा अयिलयम थिरुनल ने संरक्षण दिया और उसके बाद उन्होंने औपचारिक प्रशिक्षण शुरू किया। उन्होंने मदुरै में पेंटिंग की मूल बातें सीखीं। बाद में, उन्हें राम स्वामी नायडू द्वारा जल चित्रकला में और ब्रिटिश चित्रकार थियोडोर जोनसन द्वारा अनिच्छा से तेल चित्रकला में प्रशिक्षित किया गया।

ब्रिटिश प्रशासक एडगर थर्स्टन राजा रवि वर्मा और उनके भाई के करियर को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण थे। उनको 1873 में वियना में अपने चित्रों की प्रदर्शनी के लिए पुरस्कार जीतने के बाद व्यापक प्रशंसा मिली। उनके चित्रों को 1893 में शिकागो में आयोजित विश्व कोलंबियाई प्रदर्शनी में भी भेजा गया था और उन्हें तीन स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया था। उन्होंने अपने चित्रों के विषयों की तलाश में पूरे भारत की यात्रा की। उन्होंने अक्सर हिंदू देवियों को भारतीय महिलाओं पर आधारित किया, जिन्हें वे सुंदर मानते थे। राजा रवि वर्मा विशेष रूप से महाभारत के दुष्यंत और शकुंतला, और नल और दमयंती की कहानी के प्रसंगों को दर्शाने वाले अपने चित्रों के लिए जाने जाते हैं। हिंदू पात्रों

का रवि वर्मा का प्रतिनिधित्व महाकाव्यों की भारतीय कल्पना का एक हिस्सा बन गया है। उनकी शैली में अक्सर दिखावटी और पृष्ठभूमि में नाटकीयता होने के लिए उनकी आलोचना भी होती रही है।

राजा रवि वर्मा प्रेस

प्रत्यक्ष रूप से त्रावणकोर के तत्कालीन दीवान (प्रधानमंत्री) टी. माधव राव की सलाह पर, रवि वर्मा ने 1894 में घाटकोपर, मुंबई में एक लिथोग्राफिक प्रिंटिंग प्रेस शुरू की और बाद में इसे 1899 में महाराष्ट्र के लोनावला के पास मालवली में स्थानांतरित कर दिया। प्रेस द्वारा उत्पादित ओलियोग्राफ में ज्यादातर महाभारत, रामायण और पुराणों से लिए गए दृश्यों में हिंदू देवी-देवताओं के चित्र थे। ये ओलियोग्राफ बहुत लोकप्रिय थे और रवि वर्मा की 1906 में मृत्यु के बाद भी कई वर्षों तक हजारों की संख्या में छपते रहे।

रवि वर्मा प्रेस उस समय भारत में सबसे बड़ी और सबसे नवीन प्रेस थी। प्रेस का प्रबंधन वर्मा के भाई राजा वर्मा द्वारा किया जाता था, लेकिन उनके प्रबंधन के तहत यह एक व्यावसायिक विफलता थी। 1899 तक प्रेस भारी कर्ज में डूब चुका था और 1901 में प्रेस को जर्मनी के उनके प्रिंटिंग तकनीशियन फ्रिट्ज श्लेचर को बेच दिया गया था। श्लेचर ने रवि वर्मा के प्रिंट छापना जारी रखा, लेकिन बाद में नए अलंकरण बनाने के लिए अन्य कलाकारों को नियुक्त किया। श्लेचर ने वाणिज्यिक और विज्ञापन लेबल को शामिल करने के लिए प्रेस के उत्पाद को भी व्यापक बनाया। श्लेचर और उनके उत्तराधिकारियों के प्रबंधन के तहत, प्रेस तब तक सफलतापूर्वक चलती रही जब तक कि 1972 में एक विनाशकारी आग ने पूरे कारखाने को नष्ट नहीं कर दिया। रवि वर्मा के कई मूल लिथोग्राफिक प्रिंट भी आग में नष्ट हो गए।

1894 में, राजा रवि वर्मा ने घाटकोपर, बॉम्बे में रवि वर्मा फाइन आर्ट लिथोग्राफिक प्रेस (द एफ ए एल प्रेस) की स्थापना की। प्रेस के सह-वित्तपोषक एक व्यापारी गोवर्धनदास खटाऊ मकनजी थे, लेकिन साझेदारी 1898 तक चली, जब प्रेस को लोनावला के पास मालवी में स्थानांतरित कर दिया गया और इसे द कार्ल, लोनावला प्रेस के रूप में जाना जाता था, जिसे बाद में मालवी प्रेस के रूप में पुनः नामित किया गया। रवि वर्मा प्रेस से आने वाली अधिकांश तस्वीरें वास्तव में रवि वर्मा का काम नहीं थीं क्योंकि उन्होंने कई कलाकारों को काम सौंपा था। किंवदंतियों से पता चलता है कि उनके अपने भाई राजा वर्मा के अलावा, उन्हें धुरंधर, एम.ए. जोशी और एम.ए. माली द्वारा सहायता प्रदान की गई थी, इसलिए इन कलाकारों के काम के बाद प्रिंट भी प्रेस से आए। नौरोजी नामक एक पश्चिमी प्रशिक्षित कलाकार को भी उनके स्टूडियो में काम सौंपा गया था।

लिथोग्राफी की तकनीक

लिथोग्राफी, जिसमें क्रोमोलिथोग्राफी भी शामिल है, यह ग्रीस द्वारा पानी को हटाने पर आधारित एक प्रक्रिया है। छवि को ग्रीस-आधारित क्रेयॉन या स्याही के साथ चूना (लिथो) पत्थर, दानेदार जस्ता या एल्यूमीनियम सतहों पर लगाया जाता है। चूना पत्थर और जस्ता क्रोमोलिथोग्राफ के उत्पादन में दो सामान्य रूप से उपयोग की जाने वाली सामग्री हैं, क्योंकि हॉल-हेरोल्ट प्रक्रिया के आविष्कार से पहले एल्यूमीनियम का उत्पादन सीमित था। इन सतहों में से किसी एक पर छवि बनाये जाने के बाद, छवि को तेल आधारित स्थानांतरण या मुद्रण स्याही के साथ स्याही लगाने से पहले शेष सतह की रक्षा के लिए गम अरबीक का पतला घोल और कमजोर नाइट्रिक एसिड के साथ गोंद (गम अरबीक) लगाया जाता है। अंतिम मुद्रण से पहले, छवि का प्रूफ प्रिंट किया जाता है और किसी भी प्रकार की त्रुटि हो तो उसको ठीक किया जाता है। मुद्रण के प्रत्यक्ष रूप में, स्याही लगी छवि को एक फ्लैट-बेड प्रेस का उपयोग करके कागज की शीट पर दबाव में स्थानांतरित किया जाता है। ऑफसेट अप्रत्यक्ष विधि में रबर से ढके सिलेंडर का उपयोग किया जाता है जो छवि को मुद्रण सतह से कागज पर स्थानांतरित किया जाता है। मूल के अधिक निकट पुनरुत्पादन को प्राप्त करने

के लिए अतिरिक्त पत्थरों या प्लेटों का उपयोग करके रंगों को ओवरप्रिंट किया जा सकता है। बहु-रंगीन कार्य के लिए सटीक पंजीकरण एक मुख्य रूपरेखा छवि और पंजीकरण पट्टियों के उपयोग से प्राप्त किया जाता है, जिन्हें ठोस या टोन छवि बनाने से पहले प्रत्येक पत्थर या प्लेट पर लगाया जाता है। बेन-डे माध्यम टोन ग्रेडेशन देने के लिए एक उभरी हुई जिलेटिन स्टिपल छवि का उपयोग करता है। नरम किनारे देने के लिए एक एयर-ब्रश स्याही का छिड़काव करता है। ये तान के ग्रेडेशन को प्राप्त करने के लिए उपयोग की जाने वाली केवल दो विधियाँ हैं। बारह ओवरप्रिंट किए गए रंगों का उपयोग असामान्य नहीं माना जाएगा। इसलिए कागज की प्रत्येक शीट अंतिम प्रिंट में जितने रंग होंगे उतनी बार प्रिंटिंग प्रेस से गुजरेगी। प्रत्येक रंग को सही स्थिति में रखने के लिए, प्रत्येक पत्थर या प्लेट को रजिस्टर चिह्नों की एक प्रणाली का उपयोग करके कागज पर सटीक रूप से पंजीकृत या “पंक्तिबद्ध” किया जाता है।¹

सम्मान

1904 में, ब्रिटिश राजा सम्राट की ओर से वायसराय लॉर्ड कर्जन ने वर्मा को कैसर-ए-हिंद स्वर्ण पदक से सम्मानित किया। केरल के मवेलिकरा में उनके सम्मान में समर्पित एक ललित कला का कॉलेज भी बनाया गया था। किलिमानूर स्थित राजा रवि वर्मा हाई स्कूल का नाम भी उनके नाम पर रखा गया है तथा पूरे भारत में उनके नाम पर कई सांस्कृतिक संगठन हैं। बुध ग्रह पर क्रेटर का नाम “वर्मा” भारतीय चित्रकार राजा रवि वर्मा के सम्मान में रखा गया था। क्रेटर का नाम 18 जून, 2013 को अंतर्राष्ट्रीय खगोलीय संघ (IAU) द्वारा अपनाया गया था। भारतीय कला में उनके विशाल योगदान को देखते हुए, केरल सरकार ने राजा रवि वर्मा “पुरस्कारम्” नामक एक पुरस्कार की स्थापना की थी, जो हर साल कला और संस्कृति के क्षेत्र में उत्कृष्टता दिखाने वाले कलाकार को दिया जाता है। उनकी 65वीं पुण्यतिथि पर, भारतीय डाक ने रवि वर्मा और उनकी प्रसिद्ध पेंटिंग दमयंती और हंस को दर्शाते हुए एक स्मारक डाक टिकट जारी किया।

विरासत

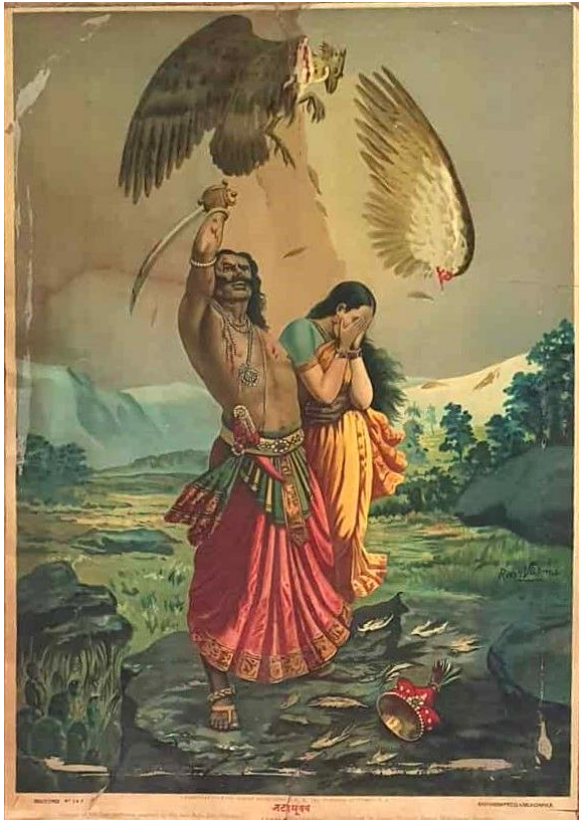
राजा रवि वर्मा को कभी-कभी पश्चिमी सौंदर्यशास्त्र को भारतीय प्रतीकात्मकता के साथ समेटने की उनकी क्षमता के कारण पहला आधुनिक भारतीय कलाकार माना जाता है। भारतीय कला इतिहासकार और आलोचक गीता कपूर ने लिखा, रवि वर्मा आधुनिक भारतीय कला के निर्विवाद पिता हैं। एक ही समय में अनुभवहीन और महत्वाकांक्षी, वह अपने बाद के हमवतन लोगों के लिए पेशेवर कौशल के माध्यम से व्यक्तिगत प्रतिभा को परिभाषित करने, विलक्षण प्रभाव के साथ सांस्कृतिक अनुकूलन के तरीकों का परीक्षण करने, अपने ऐतिहासिक दायरे के साथ सचित्र वर्णन का प्रयास करने के विशिष्ट मामले में रास्ता खोला।

इसी तरह, बड़ौदा स्कूल के कलाकार गुलाम मोहम्मद शेख ने भी रवि वर्मा के बारे में एक आधुनिक कलाकार के रूप में लिखा। अपने निबंध “रवि वर्मा इन बड़ौदा” में, शेख ने दावा किया कि वर्मा भारतीय आधुनिक कला की स्थापना में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति थे, उन्होंने दावा किया कि ‘रवि वर्मा’ के आने के बाद समकालीन भारतीय कला की कहानी कभी भी वैसी नहीं रही। उन्होंने इसके लगभग हर पहलू पर अपनी छाप छोड़ी। गीता कपूर की तरह, गुलाम मोहम्मद शेख ने रवि वर्मा के भारतीय और पश्चिमी सौंदर्यशास्त्र और तकनीकों के एकीकरण की प्रशंसा की, उनकी तुलना भारतीय आधुनिकतावादी नंदलाल बोस से की।

रवि वर्मा ने अपने लिथोग्राफिक प्रेस को चलाने के लिए जर्मन तकनीशियन फ्रिट्ज श्लेचर और पी. गेरहार्ट को नियुक्त किया था। उसके बाद श्लेचर ने रवि वर्मा प्रेस और उनकी 89 पेंटिंग्स का स्वामित्व और कॉपीराइट हासिल कर लिया। इन जर्मन प्रिंटरों ने पारदर्शी रंग पेश किए और इन रंगों को तेल की तरह एक समान बनावट और रूप के साथ इस्तेमाल करने में कुशल थे।



राजा रवि वर्मा प्रेस, सरस्वती, 1896, ओलियोग्राफ 35 गुणा 50 सेमी



राजा रवि वर्मा प्रेस, जटायु वध, 1895, ओलियोग्राफ 35 गुणा 50 सेमी

इस अवधि के दौरान रवि वर्मा और उनके समकालीनों की पेंटिंग्स के बाद कई ओलियोग्राफ भारतीय बाजार में आए। रवि वर्मा प्रेस से आने वाले विपुल क्रोमोलिथोग्राफ और ओलियोग्राफ पौराणिक प्रकृति के थे जैसे वामन अवतार, रंभा, जटायु वध, शकुंतला पत्र लेखन और मार्केड्य। रवि वर्मा प्रेस से 1920 की कुछ तस्वीरें मक्का, बुराक और दुल दुल जैसे इस्लामी विषयों पर भी आधारित थीं। ए.के. जोशी और ए.एस. देसाई जैसे व्यापारी सह प्रकाशक पूना, बॉम्बे और अन्य महाराष्ट्रीयन शहरों में रवि वर्मा प्रेस के एजेंट थे। इसके अलावा, राजा रवि वर्मा और उनके समकालीनों के प्रिंटों को पेंटिंग और प्रिंटों के आगे के पुनरुत्पादन के लिए महत्वपूर्ण रूप से अनुकूलित किया गया है।

हालांकि, कुछ इतिहासकार राजा रवि वर्मा की विरासत विवादास्पद मानते हैं। बड़ौदा स्कूल के कलाकार और कला इतिहासकार रतन परिमू ने राजा रवि वर्मा को कम अनुकूल रोशनी में देखा, उन्हें अपमानजनक रूप से किच के रूप में संदर्भित किया और दावा किया कि वर्मा का काम लोक कला और आदिवासी कला की तुलना में आध्यात्मिक रूप से कम प्रामाणिक था। उन्होंने तर्क दिया कि रवि वर्मा लोकप्रिय कला की अश्लीलता के लिए जिम्मेदार थे, उन्होंने वर्मा के काम की तुलना कैलेंडर कला और फिल्मों में लोकप्रिय छवियों के भड़कीले रंगों और कामुकता से की।

अपनी विवादास्पद विरासत के बावजूद, राजा रवि वर्मा आधुनिक और समकालीन भारतीय कलाकारों के लिए एक महत्वपूर्ण कलाकार बने हुए हैं। उदाहरण के लिए, आधुनिक कलाकार नलिनी मालानी ने राजा रवि वर्मा के आदर्शवादी राष्ट्रवाद पर सवाल उठाने के लिए अपने वीडियो इंस्टालेशन “यूनिटी इन डायवर्सिटी” में राजा रवि वर्मा के संगीतकारों की आकाशगंगा को फिर से बनाया। इसी तरह, समकालीन कलाकार पुष्पमाला एन ने राजा रवि वर्मा की देवी और भारतीय महिलाओं के आदर्श चित्रण को तोड़ने के लिए खुद को विषय के रूप में रखते हुए कई रवि वर्मा चित्रों को फिर से बनाया।

कई संगठन उनकी याद में कार्यक्रम करते हैं और उनके नाम पर पुरस्कार देते हैं। गुजरात के वडोदरा के लक्ष्मी विलास पैलेस के दरबार हॉल में उनकी याद में प्रतिवर्ष महाराजा रणजीतसिंह गायकवाड़ कला महोत्सव का दो दिवसीय उत्सव आयोजित किया जाता है। दृश्य कला के क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए राजा रवि वर्मा पुरस्कार इस उत्सव के दौरान प्रदान किया जाता है। कलाकार जयंत पारीख इसके पहले प्राप्तकर्ता थे।

इस प्रकार कह सकते हैं कि राजा रवि वर्मा आधुनिक भारतीय चित्रकला व प्रिंटमेकिंग के अग्रदूत थे और भारतीय आधुनिक कला की स्थापना में एक महत्वपूर्ण स्तम्भ माने जाते हैं।

संदर्भ सूची:

1. पौउला सेनगुप्ता, 2012, द प्रिंटेड पिक्चर, फोर सेंचुरीज ऑफ इंडियन प्रिंटमेकिंग, दिल्ली
2. आर्ट गैलरी, नई दिल्ली
3. निर्मलेंदु दास - द अर्ली इंडियन प्रिंटमेकर्स। सामाजिक विज्ञान जातीय और तकनीकी अध्ययन के लिए एक दृष्टिकोण, ललित कला समकालीन नंबर 39, दिल्ली।
4. Parsram Mangharam, 2005, Raja Ravi Varma: The Most Celebrated Painter of India: 1848 – 1906, Classic Collection, Vol I & II. Bangalore,
5. Geeta Kapur, 2000, What Was Modernism: Essays on Contemporary Cultural Practice in India (PDF). New Delhi: Tulika. p. 147. ISBN 81-89487-24-8. Archived (PDF) from the original on 22 August 2019. Retrieved 22 August 2019.
6. Om Prakash Joshi, 1985, Sociology of Indian art. Rawat Publications. p. 40.
7. Enrico Castelli and Giovanni Aprile Divine, 2005, Lithography, New Delhi, Il Tamburo Parlante Documentation Centre and Ethnographic Museum
8. K.R.N. Swamy, 2002, "A great painter, no doubt, but controversial too". Spectrum–The Tribune. Archived from the original on 28 October 2014. Retrieved 28 October 2014.
9. Deepanjana Pal, 2011, The Painter. Random House India. ISBN 9788184002614. Retrieved 18 April 2015.
10. Lakshmi Vilas Palace Vadodara, 2015, "Raja Ravi Varma Paintings, Vadodara". History of vadodara.in. Archived from the original on 24 September Retrieved 24 January.
11. Rajadhyaksha, Ashish; Willemsen, Paul, 1999, Encyclopaedia of Indian cinema. British Film Institute. ISBN 9780851706696.
12. Christopher Pinney, 2004, London, Reaktion Book, Photos of the Gods: The Printed Image and Political Struggle in India.
13. Ratan Parimoo, 2019, "Pop Art with Religious Motifs" (PDF). Asia Art Archive. Archived (PDF) from the original on 3 March 2022. Retrieved 22 August
14. Gulam Mohammed Sheikh, 2019, "Ravi Varma in Baroda" (PDF). Asia Art Archive. Archived (PDF) from the original on 7 February 2023. Retrieved 22 August.
15. Partha Mitter, 1994, Art and Nationalism in Colonial India, 1850-1922: Occidental Orientations. Cambridge University Press. pp. 69, 193, 208. ISBN 978-0-52144-354-8.

16. Richard Davis, 2012, Gods in Print: Masterpiece of India's Mythological Art. San Rafael, California: Mandala Publishing. p. 83. ISBN 9781608871094.
17. Ratan Parimoo, 1975, "Kitsch: The Vulgarisation of Art". The Times of India. Archived from the original on 22 August 2019. Retrieved 22 August 2019.
18. Jayant Parikh 2023 got "Raja Ravi Varma Award Ref. by Mctears". Mctears.co.uk. Archived from the original on 5 April 2023. Retrieved 25 March.
19. R. Erwin Neumayer and Christine Schelberge, 2005, Raja Ravi Varma: Portrait of an Artist, The Diary of C. Raja Raja Varma/edited by New Delhi, Oxford University Press,
20. E.M Joseph Venniyur, Raja Ravi Varma, former director of AIR
21. Vikrant Pande, 2013, Raja Ravi Varma: A Novel, Ranjit Desai -Translated by, Pub: Harper Perennial [ISBN 9789350296615](https://www.harpercollins.co.uk/9789350296615)
22. Piramal Art Foundation, 2016, Pages of a Mind: Life and Expressions, Raja Ravi Varma, [ISBN 9788193066805](https://www.piramalart.com/9788193066805)